श्री मुंबादेवी माताजी

अन्य क्षेत्रे कृतम् पापम्
तीर्थक्षेत्रे विनश्यति
तीर्थक्षेत्रे कृतम् पापम्
वज्रलेपो भविष्यति

धरती पर बसे हुए मानव के हाथों से कभी कभार पाप कर्म जाने अंजानें में होता हैं। उसी पाप से मुक्ती पाने के लिए मानव तीर्थ यात्रा पर जाता हैं। परंतु जब की तीर्थयात्रा याने की अपनी कुलदेवता या ग्रामदेवता इसी से लेकर अन्य किसी भी देवी देवताओ के मंदिरों में अपने हाथों से कभी ना कभी एक पापकर्म हो जाता हैं। और यह अपने दिल में बस जाता हैं। इसलिए अपने देवी देवताओं के प्रति श्रद्धा कायम रखने के लिए एक ग्रंथस्वरूप किताब प्रकाशित करने सें निश्चित रूप से जाने अंजाने में हुए पापों का खंडन हो सकता हैं।

प्रकाशक : (जान्हवी म्यझिक) जान्हवी राजेश माजगुणकर
आभार- श्री. मुंबादेवी चेरिटेबल ट्रस्ट
सहकार्य - श्री. हेमंत पु. जाधव (महाव्यवस्थापक, श्री. मुंबादेवी मंदिर)
मुद्रक - पार्थ ॲड., गिरगाव, मुंबई
वितरक - श्री त्रिपाठी पुस्तक भाण्डार,१६६ श्री. मुंबादेवी मंदिर कपाऊंड,
संर्पक - 022-2242-4959/0807
मूल्य : ३० रुपये

संतो की संगत

किसी भी व्यक्ती में जो बदलाव आते हैं और जीवन सफर में जो अचानक मोड़ आते हैं ऐसे मोड़ व्यक्ती जीवन अनुभव मैंने स्वयं किया हैं । जिस प्रकार बेर के बन मे एकाद पेड चंदन का होता हैं तो उसकी खुशबू में सारा बेर का बन सुगंधमय हो जाता हैं ठिक उसी प्रकार अपने व्यावहारिक दुनिया में राह भुला हुआ मुसाफिर किसी संत की संगत में आता हैं तो उसका पुरा जीवन ही बदल जाता हैं।

पत्रकारिता और वह भी समाज की खबरें लेन-देन में एकही तरह के व्यक्तियों से, परिस्थितीयोंसे और घटनाओं से गुजरना पडा। उसी समय समाज की तरफ देखने का नजरिया एक अलग सा हुआ। ऐसा लगता था कि जीवन और समाज दोनों ही धन और शौहरत के पिछे ही भाग रहे हैं।

मारामारी, खून, डकैती के सिवाय जीवन में और भी कई सारी अच्छी घटनाएँ तथा सज्जनों का विद्वानोंका सिलसिला हैं । यह बात समझने में थोडी देर लग गई, लेकिन जब आज बात समझ में आई हैं तो जीवन का सबसे बड़ा अर्थ अध्यात्म के भीतर ही छुपा हैं। यहं महसूस होने लगा।

समाजसेवा के साथ-साथ अध्यात्म की ओर भी मेरा झुकाव बढ़ता गया।

संतों के साथ रहनेका प्रभाव बढ़ता गया। तीर्थक्षेत्र, देवी देवताओं के बारे में अधिक जानकारी मीलने लगी। आध्यात्मिक लेखन करने लगा।

इसलिए मैं श्री मुंबादेवी माता से प्रार्थना करता हूँ कि हे माँ मुझे आशिर्वाद दे ताकि बहुत सारा आध्यात्मिक लेखन करने के लिए मुझे बुद्धि प्राप्त हो।

।। जय माँ मुंबादेवी ।।

ॐ विश्वेश्वरी जगत धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रा भगवती विष्णोरतुला तेजस:प्रभु ब्रह्मोवाच।

जगनिर्मात्री और विश्व को जीवन देनेवाली और विनाश करनेवाली श्रीविष्णु प्रिया हे भगवती माँ! आप ॐकार स्वरुप हैं, अमृत स्वरुप हैं, संध्या स्वरुप हैं, सावित्री हैं, विश्व–जननी हैं, विश्व–उत्पत्ति हैं।

हे माँ, तू ही महाविद्या, तू ही महामाया, तू ही महाबुद्धि, महामोह निर्मात्री, तू ही महादेवी, तू ही माहेश्वरी है।

हम तुम्हे प्रणाम करते हैं।

अभिषेक
कुमकुम अर्चन
कपुरआरती
नवा वरघोडिया

१. श्री मुंबादेवी मंदिर में अभिषेक किया जाता हैं। इस अभिषेक के लिए भक्तों को ११ रु. देकर रसीद (पावती) लेनी पड़ती हैं।

२. कुमकुम अर्चन - इस कुमकुम अर्चन के लिए भक्तों को २१ रू. देकर रसीद लेनी पड़ती हैं।

३. श्री कपुर आरती - इस कपुर आरती के लिए ११ रु. देकर श्री माताजी के करीब भक्तों को आरती दी जाती हैं। यह कपुर आरती कोई भी भक्त कर सकता हैं। रसीद (पावती) लेना जरूरी हैं।

४. नवा वरघोडिया- नवा वरघोडीया इसका मतलब जिनकी नई-नई शादी होती हैं और दुल्हा-दुल्हन श्री माताजी के द्वार आकर अपने सुखी जीवन के लिए प्रार्थना करते हैं। दुल्हा दुल्हनको माताजी के करीब आकर हार-फुल नारीयल-चुनरी- साड़ी —- प्रसाद चढ़ाने का अवसर मिलता हैं। इस के लिए ५१ रु. देकर रसीद लेना (पावती) आवश्यक हैं।

श्री. मुंबादेवी मंदिर में होनेवाले विविध उत्सव

मुंबई की ग्रामदेवता श्री मुंबादेवी मुंबई शहर में प्रसिद्ध हैं।

हररोज हजारों भक्त माताजी का दर्शन लेकर नतमस्तक हो जाते हैं।

माताजी के मंदिर में विविध उत्सव होते हैं और इस उत्सव में लाखों की संख्या मे भक्तों की भारी भीड़ हो जाती हैं।

१. पाठ उत्सव (मंदिर का वर्धापन दिन)माघ महिने मे पेहले एकादशी के दिन

२. श्री हनुमान जयंती उत्सव

३. चैत्र नवरात्र

४. आश्विन नवरात्र

५. दिपावली उत्सव

६. अन्नकूट- (दिपावली के शुभ अवसर पर)

७. होम-हवन

शतचंडी यज्ञ होम

श्री मुंबादेवी मंदिर के माध्यम से शतचंडी यज्ञ का आयोजन २३ फरवरी २०११ से २५ फरवरी २०११ तक किया गया।

इन दिनों बड़ी श्रद्धा से और बहुत सारे विद्वान ब्राह्मणों द्वारा यह शतचंडी यज्ञ संपन्न हुआ। लगातार तीन दिन तक यह शतचंडी यज्ञ चलता रहा। इस शुभमंगल दिनो कई प्रतिष्ठित व्यक्तीयोंने इस यज्ञ होम का लाभ उठाया। इसी दौरान हजारो भाविक उपस्थित थे। इस बीच मंदिरो के सभी प्रतिष्ठित संचालक और कर्मचारी उपस्थित थे ।

शतचंडी यज्ञ के समय अग्नि प्रज्वलन का चमत्कार

श्री मुंबादेवी मंदिर के माध्यम से शतचंडी यज्ञ होम के लिए एक बडासा कुंड खोदा जाता हैं और इस यज्ञकुंड में सभी प्रकारकी यज्ञ सामग्री डाली जाती हैं। ब्राह्मण के द्वारा मंत्र पाठ पढ़कर यह शतचंडी यज्ञ होम को अग्नि प्रज्वलन का चमत्कार देखने मिलता हैं।

यह चमत्कार देखने के लिए भीड होती हैं। यह अग्नि प्रज्वलन के लिए ब्राह्मणों की आवश्यकता होती हैं।

श्री मुंबादेवी मंदिर के गुम्बद (घुमट) पर ध्वजा लगाने का विशेष दिन

श्री मुंबादेवी मंदिर के नवरात्र उत्सव के बाद विजयादशमी (दशहरा) के अवसर पर ध्वजा लेकर कल्याण से पदयात्रा करके श्री मुंबादेवी लेकर आते हैं। यह ध्वजा इतना बड़ा रहता हैं की इसे लाने के लिए बहुत से व्यक्तीओंकी जरूरत होती हैं। यह ध्वजा लाते समय भाविक कल्याण से श्री मुंबादेवी मंदिर जय अंबे। जय अंबे का नारा लगाते बड़े उत्साह और जोश के साथ आते हैं।

यहाँ भाविकोंकी संख्या सौ से अधिक होती हैं। यहाँ ध्वजा कल्याण से उठने के बाद इसे कहीं भी निचे नही रखते। यहाँ पहले पूजापाठ- मंत्र-आरती के जयजयकारों के साथ मंदिर में प्रवेश करते हैं। माताजी के चरणों में ध्वजा को स्पर्श कराके उसे मंदिर के घुमटपर लगाया जाता हैं।

हवन कुंड

श्री. मुंबादेवी मंदिर में हवन कुंड हैं। यह विशिष्ट रूप से बनाया हुआ हैं। हवन कुंड दिशा व्यवस्थित रूप से दिखाई पड़ता हैं। हवन कुंड की रोजाना पूजा होती हैं। मंदिर के ब्राह्मण हार-फुल-अगरबत्ती-पूजापाठ करके अग्नी प्रज्वलित करते हैं। यह मंगलविधी ठिक ११.३० बजे होती हैं।

मन्नतों की ध्वजा

श्री मुंबादेवी माता के दर्शन के लिए लाखो भाविक आते हैं और दर्शन पाकर भाविकोंके मन में प्रसन्नता छा जाती हैं। कई भाविक अपने आए हुए संकटोंका निवारण करने के लिए देवी माँ से मन्नत माँगते हैं कि, मेरी यह मनोकामना पुरी होनेपर मैं घुमटपर ध्वजा लगाऊँगा। ऐसी कई ध्वजा भाविकोंकी मन्नते पुरी होने पर घुमट के ऊपर लगायी गयी हैं।

अन्नकूट- (दिपावली के शुभ अवसर पर)

श्री मुंबादेवी माता के मंदिर में हर वर्ष दिपावली के शुभ अवसर पर अन्नकुट का आयोजन किया जाता है । इस शुभ दिन भक्तगण हजारों की संख्या में उपस्थित रहते है । अन्नकुट का प्रसाद सभी भक्तो को दिया जाता है ।

अखंड ज्योत

श्री मुंबादेवी माता के मंदिर में अखंड ज्योत २४ घंटे प्रज्वलित रहती है । यह अखंड ज्योत माताजी मूर्ति के नजदिक है ।

श्री.मुंबादेवी स्थित परिसर अध्यात्मिक रुप से पवित्र

मुंबई शहर ! मुंबई शहर की भागदौड़, घडी के काँटेपर चलनेवाले मुंबईकर.

हर आदमी अपने अपने व्यवसाय और नौकरी में व्यस्त हैं।

मुंबई शहर के एक इलाके में बसा हुआ मुंबादेवी परिसर।

यह मुंबादेवी का परिसर बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ साक्षात माता मुंबादेवी बिराजमान हैं।

श्री. मुंबादेवी स्थित परिसर आध्यात्मिक रूपसे बहुत पवित्र तथा पर्यटन का आकर्षण केंद्र हैं।

इस इलाके को व्यापार का केंद्रबिंदू माना जाता हैं। इस परिसर में भुलेश्वर मार्केट, स्वदेश मार्केट, झवेरी बाजार हैं। यहाँ सभी जाती के लोग व्यापार करतें हैं।

श्री. मुंबादेवी माता व्यापारीयोंकी चिंता दूर करने के लिए आशीर्वाद देती हैं।

मंदिर के चारों ओर व्यापार हैं। यहाँ व्यापार करनेवालोंको चिंता दुःखो का पता नही चलता।

इस विभाग में व्यापार करनेवाले व्यापारी माँ के छत्रछाया में हैं।

अब देवी माँ के दर्शन के लिए केवल महाराष्ट्र से ही नही बल्की पुरे भारतसे पर्यटक आते हैं।

यहाँ एक परंपरा हैं की व्यापार या कारोबार शुरू करनेसे पहले माँ मुंबादेवी माता को नतमस्तक होकर आशीर्वाद लेकर ही अपने नये कारोबार की शुरूवात करते हैं।

औद्योगिक विकास पारिवारिक सुख तथा आरोग्य व धनप्राप्ती के लिए देवी माँ के सामने नतमस्तक होकर मन्नते पुरी करने के लिए दुःख से मुक्ती पाने के लिए श्री मुंबादेवी माता सदैव हमारे सरपर कृपादृष्टी रहे, यही भक्तोंकी इच्छा होती हैं। मुंबादेवी परिसर अतिशय सुंदर और मोहक लगता हैं। मंदिर के अंदर आने के बाद जो स्तंभ है वह पुरातन दिखते हैं। उस स्तंभ के उपर बहुत सारी नक्षीकाम किये हुए नजर आते हैं। यहाँ आकर मन आनंदित और प्रफुल्लित होता हैं।

मंदिर के भीतर आने के बाद माँ मुंबादेवी का दर्शन पाकर भक्त धन्य धन्य हो जाते हैं।

श्री. मुंबादेवी मंदिर में माताजी दर्शन के बाद आपको अगर इस परिसर में खरीदारी

करना है तो यहाँ पर कपडा, जेवर, साडी, बरतन इनका भारी मात्रा में व्यापार होता हैं। यहाँ की हॉटेल्स भी प्रसिद्ध हैं। भोजनालय की व्यवस्था भी बहुत अच्छी हैं। यहाँ भगत ताराचंद और सुरती भोजनालय बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ का जिलेबी और पापडा बहुत प्रसिद्ध हैं। इस इलाके में व्यापारीओंकी बहुत भीड रहती हैं। यहाँ पर ज्वेलवर्ड करके इमारत हैं। वह बहुत पुरातन हैं। सभी प्रकार के ज्वेलरी का भंडार हैं। यह परिसर खरीदारी का बहुमूल्य साधन हैं।

मंदिर में माताजीके दर्शन करने के बाद इस मुंबादेवी मंदिर के दाये और बाये की तरफ विविध देवीदेवताओंके मंदिर हैं। श्री. संतोषीमाता मंदिर,श्री हनुमान मंदिर, अंबामाता मंदिर, श्री. राधाकृष्ण मंदिर, सत्यनारायण मंदिर।

इस मंदिर के ब्राह्मण रोज पूजा-आरती करते हैं। इस मंदिर के लिए अलग अलग ब्राह्मणोंकी व्यवस्था की हैं।

सब मंदिर की परिक्रमा करने के बाद मन प्रसन्न हो जाता हैं।

मंदिर का दर्शन करने के बाद में यहाँ पर विविध प्रकार की छोटी छोटी दुकाने हैं। यहाँ दुकानोंमे धार्मिक पुस्तिका, फोटो, गलेमें पहनने कि लिए माला यह सभी प्रकार की वस्तुए मिलती हैं। दिया, समई, ऑडियो सीडी, व्हिडिओ सीडी, वास्तु की शांती के लिए भी कई प्रकारकी वस्तुए मिलती हैं। भाविक इस छोटी छोटी दुकानों मे जाकर अपने लिए उपयुक्त होनेवाली वस्तुओं का मूल्य देकर खरीदारी करते हैं।

हार-फूल-चुनरी-नारियल के दुकानों का वैशिष्ट्य

श्री. मुंबादेवी माता के दर्शन करने के लिए माताजी को प्रसाद के रुप में हार-फूल-चुनरी-नारियल चढाए जाते हैं और यह सभी प्रसाद टोकरियों से बनाई हुई थाली में रखा जाता हैं। माताजी को चुनरी भारी मात्रा में चढायी जाती हैं।

प्रसाद के साथ साथा पेढ़ा (मिठाई) भी चढ़ायी जाती हैं। यहाँ मिठाई की भी छोटी छोटी दुकाने हैं। माताजी प्रसाद के रूप में हार-फूल-चुनरी-नारियल-अगरबत्ती-पेढ़ा का प्रसाद चढाया जाता हैं।

श्री. मुंबादेवी माताजी के परिसर में मुंडन करने की प्रथा

भारत में कई मंदिरोंमे मुंडन की प्रथा पायी जाती हैं। श्री तिरुपती बालाजी, मुंबई में श्री महालक्ष्मी मंदिर और अन्य विविध मंदिरोंमे मुंडन कि प्रथा चालू हैं।

श्री मुंबादेवी माताजी के परिसर में भी मुंडन की प्रथा चालू हैं। बालक माताजीका दर्शन

करने के बाद विविध दिनों मे यहाँ आकर मुंडन करते नजर आते हैं।

यह परंपरा कई सालों से चलती आ रही हैं।

श्री मुंबादेवी मंदिर में आने के लिए आप विविध साधन का इस्तेमाल करते हैं। टॅक्सी, बस,ट्रेन या अपनी खुद की गाड़ी. कई भाविक ट्रेन से आते हैं। कई भाविक बस से आते हैं। यहाँ रविवार और छुट्टी के दिनों में भीड बहुत होती हैं।

श्री सिद्धीविनायक मंदिर से मुंबादेवी मंदिर में अगर आपको आना हैं तो टॅक्सी या बससे आ सकते हैं।

बस क्रमांक-८८,८६,८४,८७,३३. आप कोई भी बससे आ सकते हैं या चर्नी रोड़ या मरीन लाईन्स से उतरकर सीधा श्री मुंबादेवी मंदिर की तरफ आ सकते हैं।

श्री महालक्ष्मी मंदिर से मुंबादेवी मंदिर में अगर आपको आना हैं तो

बस क्रमांक-१३२,१३३,८१ हाजीअली से १२४ नंबर की बस से आ सकते हैं या चर्नीरोड या मरीन लाईन्स स्टेशन पर उतरकर सीधा श्री मुंबादेवी मंदिर आ सकते हैं।

श्री बाबुलनाथ मंदिर से मुंबादेवी मंदिर आपको अगर आना है तो बस क्रमांक - ८८,८६,८४,८७,३३. चर्नीरोड या मरिन लाईन्स उतरकर सीधा मुंबादेवी मंदिर आ सकते हैं।

मस्जिद बंदर से श्री मुंबादेवी से भी आप आ सकते हैं। मुंबादेवी मंदिर परिसर के करीव बस क्रमांक (नंबर)-१,१५,५,१३४,१२४,९,१०१,१४.यहाँ सभी बस आती हैं।

मुंबई में रहनेवाले मुंबईकर एक बार तो इस श्री मुंबादेवी में जरूर आते हैं। नये

दुल्हा-दुल्हन अपने सुखी जीवन के लिए माँ का आशीर्वाद लेने जरूर आते हैं।

श्री. मुंबादेवी मंदिर परिसर में महापूजा का आयोजन

श्री.मुंबादेवी परिसर में बैठकर महापूजा का आयोजन किया जाता हैं। माताजी का दर्शन करने के बाद परिसर में बैठे हुए ब्राह्मणोंद्वारा महापूजा करने की व्यवस्था हैं। इस महापूजा के लिए किसी भी प्रकार की सामुग्री लाने की जरुरत नही पड़ती।

ब्राह्मण कें मंत्र और कथा के द्वारा इस महापूजा को बड़ी श्रद्धा के साथ किया जाता हैं।

नवरात्र में देवी माँ को नौ दिन विशेष प्रसाद

१. पहले दिन गाय के घी से बनाया हुआ प्रसाद बनाने से निरागी रहने का आशिर्वाद मिलता हैं।

२. दुसरे दिन शक्कर का प्रसाद बनाकर, परिवारमें प्रसाद ग्रहण करें। ऐसा करने से अपने आयुमें बढोतरी होती हैं।

३. तिसरे दिन दूध या दूध से बनाये हुए मिठाई, खीर का प्रसाद देवी माँ को चढ़ाने से मुक्ती मिलती हैं।

४. चौथे दिन देवी माँ को मालपुआ का प्रसाद चढ़ाकर ब्राह्मण को देनेसे अपनी बुद्धी का विकास होकर निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती हैं।

५. पाँचवे दिन देवी माँ को केले का प्रसाद चढ़ाने से अपना शरीर स्वस्थ रहता हैं।

६. छठवे दिन में देवी माँ को शहद का प्रसाद चढाने से आकर्षक शक्ती बढ़जाती हैं।

७. सातवे दिन देवी माँ को .... का प्रसाद चढ़ाने से आये हुए संकट टल जाते हैं।

८. आठवे दिन देवी माँ को नारियल (श्रीफल) का प्रसाद चढाकर यह प्रसाद दान में देते हैं। तो संतान संबंधी होनेवाली पिड़ा से मुक्ती मिलती हैं।

९. नवमी के दिन तील प्रसाद चढ़ाकर ब्राह्मणोंको दान करनेसे भय दूर हो जाता हैं। अपघात से बचाव होता हैं।

नवरात्र की शास्त्रीय विधी

नवरात्र की विधी कोई भी कर सकता हैं। उसमे कोई भेद नहीं। प्रतिपदा के दिन घटस्थापना करने से नवमी तर सप्तपदीका जप, देवीभागवत का श्रवण, अखंडदिप, एकमुक्तव्रत, पुष्पमाला, सुहागन और कुमारिका को भोजन देकर उसकी पूजा करके आखरी दिन होम हवन और बली चढ़ाकर नवरात्र कर सकते हैं।

शक्ति ही सामर्थ्य का दूसरा रुप है।

शक्ति किसी भी रुप में पाई जा सकती है। आबादी भी शक्ति का दूसरा अर्थ हो सकता है और फिर शक्ति धन, अनाज और स्वास्थ्य के रुप में भी हो सकती है। तांत्रिक तथा वैज्ञानिक प्रगति भी एक किस्म की शक्ति है।

शक्ति शब्दों में हो सकती है, शक्ति सौंदर्य में हो सकती है और वाणी में भी हो सकती है। अग्निशास्त्र तथा प्रक्षेपास्त्र जैसे संहारक अस्त्रों में भी शक्ति हो सकती है। ये सब देवी माँ के ही शब्दरुप हैं। इसीलिए माँ को आदिशक्ति कहते है।

संगोपन हो या संहार दोनों के लिए शक्ति आवश्यक है। इसी तरह शक्ति को सर्वत्र कई रुपों में पाया जाता है और इसी कारण शक्ति को आध्यात्म में सबसे ज्यादा महत्त्व प्राप्त हुआ है। वैसे अपने शास्त्र के अनुसार शक्ति यानी देवी–माताजी को सात रुपों में पूजा जाता है, जैसे ब्राह्मी, महेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही और एन्द्री। ऐसी सात शक्तियों की माता पार्वतीजी के सात अवतार, अपने ग्रंथो में पाये जाते हैं।

कश्मीर शैव–पंथियों का उपासना केंद्र है। इस संप्रदाय का जन्म कश्मीर तथा कैलाश में हुआ है और शैव–पंथियों का भी महान पीठ कहलाता है। माँ सती का कंठ जहां गिरा, वहां अमरनाथ शक्तिपीठ उत्पन्न हुआ। यज्ञ–कुंड से महासती का मृत शरीर उठा कर शंकरजी ने अपने कंधों पर रखकर पृथ्वी का भ्रमण करना शुरु किया। शंकरजी का ऐसा चलना भगवान विष्णु से देखा नहीं गया और उन्होंने अपने

सुदर्शन चक्र से माता के मृत शरीर के कई टुकड़े किए। ऐसा माना जाता है कि मात के शरीर के टुकड़े जहाँ–जहाँ गिरे, वहाँ–वहाँ हरेक स्थान पर एक शक्तिपीठ का निर्माण हुआ।

कांची–स्थल में अस्थि गिरने के कारण कामाक्षी देवी की स्थापना श्री शंकराचार्य ने की। कोलकाता में महासती के दाहिने पाँव की चार उंगलियां (अंगूठा छोड़कर) गिरीं वहाँ महाकाली शक्तिपीठ निर्माण हुआ। दक्षिणेश्वर रेलवे स्टेशन के बगल में कालिका देवी का मंदिर है जो रानी रसमणी नें स्थापित किया है। वह बहुत ही जागृत देवस्थान है।

श्री शैल पहाड़ी पर मल्लिकार्जुन मंदिर है। उसी जगह भ्रमसंबा देवी का भी मंदिर है। यहाँ भी माँ सती का कंठ गिरा था, ऐसा माना जाता है। यह स्थान बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक गिना जाता है। आंध्र में करनूल जिले में नंदिकोटकूर तहसील को दक्षिण कैलाश के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार भारतवर्ष में ५१ शक्तिपीठ है जिसमें महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिलें में महालक्ष्मी का शक्तिपीठ है जिसे दक्षिण–काशी माना जाता है। स्कंध–पुराण तथा पद्म–पुराण में भी कोल्हापुर की महालक्ष्मीजी का निर्देश किया गया है। कोल्हापुर की महालक्ष्मीजी के बारे में ऐसा कह जाता है कि भगवान विष्णुजी स्वयं माताजी के रुप में वहाँ रहते थे। उन्होंने वहाँ आठों दिशाओं में आठ शिवलिंगों की स्थापना की। भगवान शेष चार महाद्वारों की महाकाली के रुप में, भगवान ब्रह्मदेव महासरस्वरती के रुप में पाये जाते हैं।

दत्तगुरु वहाँ हमेशा दोपहर बारह बजे भिक्षा मांगने आते थे। कोल्हापुर के मंदिर में स्थापित महालक्ष्मीजी के दायें हाथ में गदा है, बायें हाथ में ढाल और तीसरे हाथ में माटी का लिंग और चौथे हाथ में पान–पत्र है तथा मस्तक पर प्रत्यक्ष भगवान शेष की छाया है। पुराण में ऐसा कहा जाता है कि महिषासुर नाम का एक असुर था

जिसका शरीर भैंसे का था और चेहरा मानव का। लेकिन भयानक होने के कारण वह महिषासुर के नाम से जाना जाता था। वह बड़ा ही शक्तिशाली था। उसके साथ ऐसे ही कई बलवान असुर थे। उसे अपनी ताकत का बहुत ही घमंड था। अपनी ताकत के बल पर वह जनता के ऊपर अत्याचार करता था। उसके अत्याचर आखिर इतने बढ़े के लोगों ने शक्ति की आराधना शुरु की। उसी समय अचानक आसमान में प्रकाश प्रकट हुआ और उसमें से एक स्त्री प्रकट हुई जिससे हजारों हाथों में कई शस्त्र थे (तलवार, धनुष, शूल, वज्र, पाश, परशु जैसे दिव्य अस्त्र थे। तथा उसके गले में कई तरह के अलंकार थे।

महिषासुर और देवी का युद्ध प्रारंभ हुआ। उस समय महिषासुर ने अपनी माया के बल पर कई रुप धारण किये। तब देवी ने महिषासुर के सभी रुपों को अपने हजारों हाथों से नष्ट कर दिया। उसके सीने में त्रिशूल का प्रहार किया और अपने तलवार से उसका मस्तक उड़ा दिया। इस प्रकार दुष्ट महिषासुर का नाश करते हुए देवी माँ ने कहा, 'जब–जब मेरे भक्तों पर संकट आयेगा तब–तब मैं किसी न किसी शक्ति के रुप में आती रहूँगी' इतना कहकर देवी माँ अदृश्य हो गई। इसीलिए देवी महालक्ष्मी को महिषासुरमर्दिनी के नाम से भी जाना जाता है।

श्री जयदुर्गा माता

देवी माहात्म्य में दुर्गा देवी के पराक्रमों का वर्णन किया है । महिषासुर, चंडमुंड, शुंभनिशुंभ इन सब महाकाय असुरों का उसने वध किया । खुद के बारे में देवी क्या कहती है,

इत्थं यदा यदा बाधा दानबोत्थाभविष्यति ।
तदा तदाऽवतीर्याहं करिण्याम्यरिसंक्षयम् ।

याने जब–जब असुरों का प्रभाव बढ़ेगा तब–तब मैं अवतार लेकर उनका नाश करुंगी । यह आदिमाता सर्वत्र व्याप्त है । अथर्वशीर्ष में वह खुद का वर्णन इस प्रकार करती हैं, 'मैं ब्रह्मस्वरुप हूँ, मेरी प्रकृति से ही सत् और असत् उत्पन्न हुए है, मैं ही आनंद हूँ, ब्रह्म, अब्रह्म, वेद, रूद्र, वसु, पूजा, विष्णू मैं ही हूँ । बड़े–बड़े लोगों को कार्य के लिए मैं ही प्रवृत्त करती हूँ, मैं परशक्ति, विश्वमोहिनी, पाशांकुश धारण करनेवाली महाविद्या हूँ । मेरा सत्य स्वरूप जाननेवाले यह भवसागर आसानी से पार कर पायेंगे । सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय यह कार्य ब्रह्मा, विष्णु और महेश करते हैं' लेकिन उसमें देवी का सहभाग ही बड़े पैमाने पर होता है । उसकी शक्ति नित्य, निर्दोष और कल्याणकारी है । इसी शक्ति को तंत्र–मंत्र करनेवालों ने चैतन्य नाम दिया है और मनुष्य शक्ति को पराशक्ति कहते हैं । यही शक्ति अखिल विश्व की सूत्रचालक है ।

महालक्ष्मीजी की पौराणिक जन्मकथा

एक बार श्री नारद मुनि ने भगवान विष्णु से कहा, 'प्रभो ! भगवती लक्ष्मीजी की उपासना और पूजा सर्वप्रथम किसने की, देवी का स्वरुप कैसा है और किस प्रकार से पूजा करने के बाद वो प्रसन्न होती हैं यह सब कृपा करके मुझे बताएं' तो भगवान विष्णु ने कहा, 'सुन, सृष्टि प्रारंभ होने से पहले परब्रह्म परमात्मा भगवान कृष्ण के बायें अंग से राधा प्रकट हुई। उसका मुख विलोभनीय था, तेज अपूर्व था। फिर भगवान कृष्ण की इच्छा से यही राधा दो रुप में प्रकट हुई। बायीं ओर से राधा। राधा ने भगवान श्रीकृष्ण को अपना पति माना तो लक्ष्मी ने भी श्रीकृष्ण को ही पति मानने का मन में निश्चय किया। तब कृष्ण भी दो रुपों में प्रकट हुए। दाहिनी ओर से चतुर्भुज विष्णु। फिर श्री विष्णु लक्ष्मी के साथ वैकुंठ धाम में रहने लगे।

शक्तिपीठें कैसे निर्मित हुई

आदिमाया की शक्तिपीठें कहाँ–कहाँ है यह तो कुछ ही लोगों को मालूम होगा। लेकिन ये शक्तिपीठें कैसे निर्मित हुई, यह जानकारी शायद थोड़े ही लोगों को होगी।

बहुत पुरानी बात है। दक्ष नाम का एक राजा राज करता था। इस दक्ष को एक कन्या थी। उसका नाम था दक्षयानी। उसका विवाह भगवान शंकर से हुआ था। दक्ष हमेशा भगवान शंकरजी का अपमान करता था।

एक बार उसने एक यज्ञ का आयोजन किया और शंकरजी को जानबुझकर बुलावा नहीं भेजा। दक्षयानी यानी पार्वती अपने मायके गई लेकिन अपने पति का

अपमान उसे सहन नहीं हुआ और वो अग्निकुंड में कूद गईं। इस घटना से भगवान शंकर बहुत क्रोधित हुए और उनका दक्ष राजा से युद्ध हुआ। युद्ध मे दक्ष मारा गया और भगवान शंकर विलाप करते हुए पार्वती का निष्प्राण देह अपने कंधों पर उठाकर चल पड़े और गुस्से से आगबबूला होकर तांडवनृत्य करने लगे। इस नृत्य से न केवल पृथ्वी, बल्कि पूरा ब्रह्मांड थरथराने लगा। अब सब देवताओं ने भयभीत होकर भगवान विष्णु ने अपना सुदर्शन चक्र फेंका जिससे पार्वती के शरीर के ५१ तुकड़े हो गए। ये टुकड़े जहाँ–जहाँ जाकर गिरे वहाँ–वहाँ शक्तिपीठ उत्पन्न हुआ। अपने शास्त्र के अनुसार ये शक्तिपीठें बहुत ही पुनीत तीर्थक्षेत्र माने जाते हैं।

यमाई

यह देवी साक्षात् पार्वती–माता का रुप है, ऐसा भक्तों का कहना है। कई भक्त इसे रेणुकामाता का रुप मानते है। सातारा जिले में औंध पर्वत पर इसका मंदिर है। इसकी मूर्ति काले पत्थर की है और हाथ में शस्त्र है।

फिर नगर जिले में साराले, पउ में कणेसर जगह पर, सोलापुर में पाड़ी और पंढरपुर में यमाई की स्वयंभू मूर्ति पायी जाती है।

यमादेवी

अहमदनगर जिले में शशिम मे इसका पुरातन मंदिर है। युद्ध लढ़ते समय इस देवी ने इतने दैत्यों का संहार किया कि मृत देहों का ढेर लग गया, इसलिए इसे शशिम कहते हैं। नवरात्र में तो बड़ा उत्सव होता है लेकिन अश्विन सुदी अष्टमी को यहां का पुजारी हाथ में जलता हुआ काकडा (दीया रखने का बर्तन) लेकर मंदिर की जो प्रदक्षिणा करता है वह देखनेलायक है।

यल्लमा

याने रेणुकादेवी। बेळगांव में सौदत्तीपर पर्वत के शिखर पर इसका मंदिर है। इस पर्वत को यल्लमा का पर्वत भी कहते हैं। यहां मार्गशीर्ष और चैत्र माह में बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। पंढरपुर के कासेगांव में भी यल्लमा देवी का मंदिर प्रसिद्ध है लेकिन यहाँ सिर्फ मार्गशीर्ष में ही उत्सव मनाया जाता है।

योगेश्वरी

मराठवाडा के बीड जिले में आंबेजोगाई गांव में योगेश्वरी देवी का मंदिर है। यह मंदिर हेमाडपंथी स्वरुप का है। यह देवी कुंवारी मानी जाती है। अश्विन और मार्गशीर्ष माह में यहां उत्सव संपन्न होता है।

महामाया

शिवलिंग से प्रकट होकर इस देवी ने दैत्यों का संहार किया, ऐसा भक्तों का कहना है। इसका स्वरुप भग्न रुप में है। इके चार हाथ हैं और बदन पर नागिन भी है।

म्हाळसा

ये खंडोबा की पत्नी है। इसके हाथों में दैत्य का सिर है। यह चतुर्भुज देवी म्हासळसादेवी नाम से कर्नाटक में मालव्या नाम से जानी जाती है। महाराष्ट्र में नगर

जिले में नेवासा, पैठण में भोगावती, औरंगाबाद में वॉलसॅग, नांदेड में नांदूरा गाँव में, गोवा में माडदोळ ये सब म्हाळसा देवी के प्रसिद्ध मंदिर हैं।

महेश्वरी

यह देवी पाठारे प्रभू की कुलस्वामिनी है। मुंबई मे प्रभादेवी में इसका मंदिर है। माघ महीने में यहाँ बड़ा उत्सव होता है।

ललिता

यह तांत्रिक देवता है । इसे महेश्वरी, भद्रा, श्यामला, पद्मा नाम से भी जाना जाता है । इसकी मूर्ति की विशेषता यह है की उसके हाथ में दर्पण है ।

पाटलीदेवी

कुछ कोकणस्थ ब्राह्मणों की यह कुलस्वामिनी है। यह देवी कुणबी जाति की मानी जाती है।

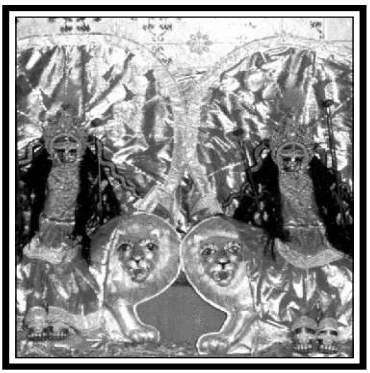

एकविरा

भगवान परशुराम की माता रेणुका देवी ही एकविरा देवी है। लोणावळा में काली लेणी के पास इसका मंदिर है। चांद्रसेनीय कायस्थ प्रभू और कोली लोगों की यह कुलस्वामिनी है। मैसूर की चामुंडा, गोवा की शांतादुर्गा, शांकभरी, रुक्मिणी ये सब इसके रुप हैं।

दैत्यों का संहार

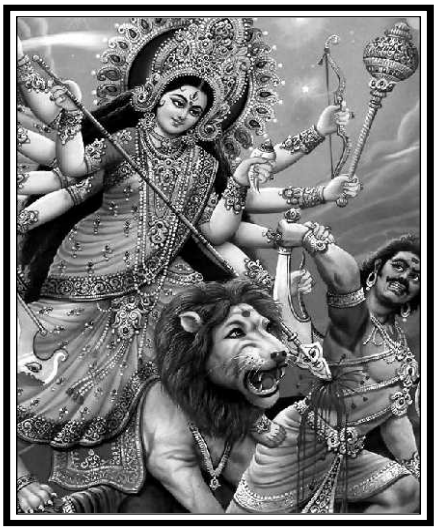

दैत्यों का संहार करने के लिए देवताओं ने देवी को कैसे उत्पन्न किया, इसका अत्यंत रोचक वर्णन 'सप्तयाक्ती' ग्रंथ में किया गया है। दैत्यों के राजा महिषासुर ने संग्राम मे देवताओं को पराजित किया और स्वर्ग पर कब्जा कर लिया। तब सब देवता लोग मिलकर ब्रह्मा की शरण में गये। ब्रह्माजी उन्हें लेकर भगवान विष्णु और शंकर के पास गये। यह सब हकीकत सुनने के बाद भगवान विष्णु और शंकर दोनों ही क्रोधित हो उठे। तभी उनके मुंह से तेज निकला और उसी तेज में देवताओं का तेज मिलकर एक सुंदर स्त्री का निर्माण हुआ।

भगवान शंकर के तेज से उसका मुख तैयार हुआ । यम से केश, विष्णु से हाथ, चंढा से स्तन, इंद्र से धड, वरुण से जांघ, ब्रह्मदेव से पांव, सूर्य से उंगलियां, कुबेर से नाक, प्रजापति से दांत और अग्नि से आँखें उत्पन्न हुई ।

भगवान विष्णु ने उसे सुदर्शन चक्र दिया, शंकर ने त्रिशूल, वरुण ने शंक, वायु ने धनुष और बाण, इंद्र ने वज्र, यम ने दंड, वरुण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिक की माला, काल ने ढाल और तलवार, सूर्य ने तेज, हिमालय ने उसे सिंह का वाहन दिया । तब भयंकर गर्जना करके और रूद्रावतार धारण करके यह देवी जाकर दैत्यों पर टूट पड़ी ।

महिषासुर का चिक्षुर सेनापती देवी के साथ युद्ध करने लगा। इसके साथ उसकी सेना भी थी। फिर देवी ने असंख्य भक्तगण निर्माण किये, उसके साथ लड़ने के लिए। घनघोर युद्ध के बाद दैत्यों का इतना संहार हुआ कि उनके सिरों (एक के ऊपर एक) का ढेर लग गया। यह सब देखकर चिक्षूर गर्जना करके देवी की

ओर बढ़ने लगा। तब देवी ने त्रिशूल के एक ही प्रकार से उसका सर धड़ से अलग कर दिया। उसके बाद चामर नाम का सेनापती हाथी पर बैठकर देवी पर हमला किया। तब देवी जिस सिंह पर बैठकर लड़ रही थी उसी सिंह ने हाथी पर कूदकर चामर को नीचे गिराया और उसे फाड़ डाला। इस तरह से उसकी सेना का भी नाश हुआ।

महिषासुर का नाश

अपने सेनापति और सेना की दुर्दशा देखकर महिषासुर को बहुत गुस्सा आया। उसने भैसे का रुप धारण किया और अपनी पूछ के बल पर उसने देवी के कई गणों का नाश किया। फिर देवी ने उस पर पाश डालकर उसे बंदी बना लिया। तब उसने भैंसे का रुप छोड़कर सिंह का रुप धारण कर लिया। देवी ने हाथ में शस्त्र लिया और वार करने ही वाली थी कि उसने मनुष्य का रुप धारण किया। तब देवी ने बाणों की बौछार करके उसे जकड़ लिया तो उसने हाथी का रुप धारण कर लिया तो देवी ने तलवार से वार करके उसकी सूंड़ काट डाली। फिर देवी ने उसे नीचे गिराया और सर धड से अलग कर दिया तो देवताओं ने जय–जयकार करके फूलों की वर्षा की।

५१ शक्तीपीठें

पार्वती के शरीर के ५१ टुकड़े जहाँ जहाँ गिरे उस स्थान से देवी के नाम का शक्तिपीठ जाना जाने लगा। १) हिंगुली – कोटरी, २) करवीर – अंबाबाई, ३) सुगंधा – सुगंधादेवी, ४) काश्मीर – महामाया देवी, ५) ज्वालामुखी – सिद्धिदा, ६) जालंधर – त्रिपुरमालिनी देवी, ७) मानस – दाक्षायनी, ८) नेपाळ – महामाया, ९) बिरीजा – बिरजा देवी, १०) गंडकी – गंडकीदेवी, ११) बहुल – बहुला (चंडीका), १२) उज्जयनी – मांगस्थ चंडिका, १३) चट्टल – भवानी देवी, १४) त्रिपूरा – त्रिपूरा सुंदरी, १५) त्रिसोला – भ्रामरी, १६) कामगिरी – कामाख्या, १७) प्रयाग – ललिता, १८) जयंती – जयंतीदेवी, १९) युगाथा – भूतधात्री, २०) कालीपीठ – कालीका, २१) किरीट – विमला, २२) वाराणसी – विशालाक्षी, २३) कुरुक्षेत्र – सावित्री, २४) मणिवेदीक – गायत्रीदेवी, २५) श्रीशैल – महालक्ष्मी, २६) कांची – देवगर्भा, २७) कालमाधव – देवीकाली, २८) रामगिरी – शिवानीदेवी, २९) शोण – नर्मदा, ३०) वृंदावन–उमा, ३१) शुची – नारायणी, ३२) पंचसागर – बाराही, बराही, ३३) करनोया – अपर्णा, ३४) श्रीपर्वत – श्रीसुंदरी, ३५) विभाष – कपालीनी, ३६) प्रभास – चंद्रभागा, ३७) भैरव – अवंती, ३८) गोदातट – विश्वमातुका, ३९) मिथीला – उमा, ४०) रत्नावली – कुमारी, ४१) नलहाटी – कालीका, ४२) कर्णाट – जयदुर्गा, ४३)

वज्रेश्वर – महिषमर्दिनी, ४४) यशोर – यशोदेश्वरी, ४५) अट्टहास – फुल्लरा, ४६) नंदीपूर – नंदिनी, ४७) जनस्थान – भ्रामरी, ४८) वैराट – अंबिका, ४९) जनस्थान – भ्रामरी, ५०) कन्यकालम – शर्वाणी, ५१) वैद्यनाथ – जयदुर्गा

देवी की ५१ शक्तिपीठ

महाराष्ट्र में आदिमाया की कुल मिलाकर साढ़े तीन महत्वपूर्ण पीठ हैं। कोल्हापुर, तुळजापुर, माहूर और सप्तश्रृंगी ये वो साढ़े तीन पीठ हैं।

कोल्हापुर की महालक्ष्मी कमल में बैठी है। उसने हाथ में चक्र धारण किया है। महिषासुर का वध उसी ने किया, इसलिए उसे महिषासुरमर्दिनी कहते हैं। यहाँ का नवरात्र महोत्सव देखने लायक होता है।

तुळजापुर की भवानी

यह भवानी माँ छत्रपती शिवाजी महाराज की कुलस्मामिनी। इसलिए महाराष्ट्र की भी आराध्यदेवी हैं। समर्थ रामदास ने इसका वर्णन 'रामवरदायिनी' के रुप में किया हैं।

यह भवानी माँ सिंह पर बैठी हैं और अष्टभुजा हैं। यहाँ भी नवरात्र महोत्सव होता है।

माहूर की रेणुका

महाराष्ट्र में मराठवाड़ा में नांदेड जिले में इसका मंदिर है। महाराष्ट्र के साथ–साथ आंध्र और कर्नाटक में भी इसके मंदिर हैं।

रेणुका जमदग्नि ऋषि की पत्नी थी और भगवान परशुराम की माता। इसे देवी एकविरा भी कहते हैं। मंदिर में जो देवी की मूर्ति है वह सिर्फ मुखौटा है।

नासिक ही सप्तश्रृंगी

महाराष्ट्र में ही नासिक जिले में सप्तश्रृंगी पर्वत पर इस देवी का मंदिर है। यह आधा पीठ कहलाता है और भी देवी माँ के बहुत से मंदिर हैं जो इस प्रकार हैं:

कलकत्ता में महालक्ष्मी

यह तांत्रिक देवता है। इसका स्वरुप बहुत उग्र है और उसकी जिह्वा से मानो खून टपकता है। गले में कटे हुए सिरों की मालाएँ हैं तो हाथ में हर तरह के शस्त्र। स्वामी रामकृष्ण परमहंस इसके परम भक्त थे। कलकत्ता में काली घाट पर इसका मंदिर है।

श्री लक्ष्मीपूजा

गौर से देखा जाय तो अमावस अशुभ माना गया है। लेकीन अश्विन माह का अमावस बहुत ही शुभ है क्योंकि इसी दिन भगवान विष्णु ने लक्ष्मी के साथ सभी देवताओं को राजा बलि के कारागृह से मुक्त करवाया था।

इसलिए इस दिन अपना घर साफ करके सभी जगह दीया जलाकर घर को सजाने की प्रथा है। ऐसा कहा जाता है कि रात के समय लक्ष्मी घूमने निकलती हैं और जिस घर में उन्हें स्वच्छता और शोभा दिखाई देती है वे उसी घर में नित्य निवास करती हैं।

जिस घर में देवताओं के भक्त और क्षमाशील पुरुष और पतिव्रता और गुणी महिलाए रहती हैं, वही लक्ष्मी का निरंतर वास रहता है।

लक्ष्मी संपत्ती की देवता मानी जाती है और कुबेर उसका रक्षणकर्ता। इसलिए व्यापारी लोग लक्ष्मी और कुबेर की पूजा धने और साळी से करते है। धने धन का प्रतिक है तो साळी समृद्धी का।

श्री महालक्ष्मी व्रत की पूजाविधि

श्री महालक्ष्मी माता की पूजा करने के लिए किसी ब्राह्मण की आवश्यकता नहीं होती। हम खुद यह पूजा कर सकते हैं। श्री महालक्ष्मी माता के फोटो का मुंह पूरब या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए। जहाँ यह फोटो रखना हो वह जगह साफ करके वहाँ पर चौरंग या पाट रखना चाहिए। फिर उसे रंगोली से सजाकर बीच में अनाज (गेहूं या चावल) गोलाकार रखना चाहिए।

एक कलश साफ करके उसमें पानी भरना चाहिए। फिर उस पानी में एक सुपारी, रुपया और दूर्वा रखनी चाहिए। कलश के मुंह पर पांच वृक्ष की डालियों का एक–एक पत्ता रखना चाहिए और उसके ऊपर नारियल (उसकी पूंछ ऊपर की तरफ होनी चाहिए) इस तरह से रखना चाहिए। कलश के बाहर की तरफ थाड़ी हल्दी और कुमकुम लगाना चाहिए। उसके बाद यह कलश पाट के ऊपर बिल्कुल बीचोबीच रखना और उसके पीछे ही श्री महालक्ष्मी माताजी का फोटो या मूर्ति रखनी चाहिए।

दुर्वा या तुलसी से श्री महालक्ष्मी माता की मूर्ति पर पानी छिड़कना चाहिए। फिर शुद्ध मन से पूजा करके हल्दी और कुमकुम लगाना चाहिए। फूलों की भेट चढ़ानी चाहिए। आरती उतारकर प्रसाद देवी माँ को अर्पण करना चाहिए। फिर हाथ जोड़कर कलश और श्री महालक्ष्मी माताजी की मूर्ति के सामने अपनी इच्छा प्रकट करनी चाहिए। उसके बाद महालक्ष्मी ग्रंथ का वाचन करना चाहिए और हो सके तो घर के बाकी सदस्य को भी श्रोता बनाना चाहिए।

शाम को ठीक उसी तरह से पूजा करनी चाहिए। महाप्रसाद अर्पण करना जिसमें एक मीठा पदार्थ अवश्य होना चाहिए। गोमाता के लिए थोड़ासा प्रसाद अलग रख देना चाहिए और रात को ही वह प्रसाद गो माता को देना चाहिए। अगर रात को नही दे सके तो सुबह अवश्य दे देना चाहिए।

दूसरे दिन स्नान करने के बाद इस कलश में रखे हुए पेड़ के पत्ते घर में ही पांच अलग–अलग जगह पर रखना और पानी समुद्र, नदी, तालाब या तुलसी वृंदावन में छोड़ देना चाहिए।

ॐ श्री नम: मंत्र का जाप रात को एक हजार बार करना चाहिए। इसके बाद बहुत ही सुखद अनुभव आपको मिलेगा। अगर घर के सभी सदस्य एक साथ यह जाप करें तो सोने पे सुहाग होगा।

पद्म पुराण में खुद श्री महालक्ष्मी माताजी ने कहा हैं कि जो भी यह व्रत करेगा सुख और समृद्धी उसे अवश्य मिलेगी।

सफेद बुधवार व्रत

श्री महालक्ष्मीजी की उपासना करने के लिए सफेद बुधवार व्रत बहुत ही लोकप्रिय है। स्त्री या पुरुष, बच्चा या बूढ़ा कोई भी यह व्रत कर सकता है। ११ बुधवार या २१ बुधवार आप इसे कर सकते हैं। फिर ११ या २१ बुधवार के बाद इसका उद्यापन किया जाय तो उसका फल अवश्य मिलता है।

जिस बुधवार से यह व्रत आरंभ करना हो, उस बुधवार को स्नान करके श्री महालक्ष्मीजी माता की मूर्ति या फोटो की पूजा करते समय सफेद वस्त्र पहनना चाहिए, इससे फल शीघ्र

मिलता है। पूजा के लिए गंध, अक्षत, कुमकुम और सफेद फूल होना जरुरी है। एक, पांच या सात प्रकार के फल प्रसाद के लिए रखना चाहिए। पूजा होने के बाद, 'हम धनप्राप्ति के लिए यह व्रत कर रहे हैं' ऐसा लक्ष्मीजी की मूर्ति से कहकर पांच सुवासिनियों (पतिव्रता महिलाओं) को बुलाकर उनकी पूजा करके प्रसाद के लिए रखे हुए फल उन्हें देना।

शाम को मूर्ति की पूजा करने के बाद उपवास छोड़ देना चाहिए। उपवास छोड़ते समय सिर्फ सफेद खाद्य पदार्थ ही खाना चाहिए, जैसे – चावल, दही, ताक या दूध। अगर एकाध बुधवार को गलती से दूसरी चीज खा ली तो उस दिन उद्यापन नहीं करना चाहिए। घर में अगर किसी स्त्री को मासिक स्त्राव शुरू हुआ तो उस बुधवार को उपवास कर सकते हैं, लेकिन मूर्ति की पूजा या सुवासिनियों को नहीं बुलाना चाहिए।

उद्यापन करते समय सुवासिनियों की पूजा करके उनका सम्मान करना चाहिए। यह व्रत बहुत मुश्किल है। इसलिए मन में बुरी चाहत नहीं आने देना चाहिए। झगड़ा नहीं करना चाहिए। जानवरों को तकलीफ नहीं देनी चाहिए।

श्री महालक्ष्मी व्रत

सफेद बुधवार का व्रत मुश्किल होने के कारण बहुत से लोग यह व्रत करने से डरते हैं। उनके लिए वैभवलक्ष्मी व्रत अच्छा है। यह व्रत स्वच्छ शरीर और साफ–सुथरे मन से करना चाहिए। यह व्रत मार्गशीर्ष महीने में किया जाय तो उसका फल शीघ्र ही मिलता है।

किसी भी महिने में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार को इस व्रत का

आरंभ करना चाहिए। ऐसे आठ गुरुवार व्रत करने के बाद आखिरी गुरुवार को उद्यापन करना चाहिए।

इस उपासना में अपने कुलदेवता और श्री महालक्ष्मीजी की मूर्ति दोनों की पूजा करनी पड़ती है। कुलदेवता के साथ श्री महालक्ष्मी देवी माँ का फोटो रखकर श्री महालक्ष्मी व्रत की कथा और उसका माहात्म्य दोनों का पठन किया जाता है।

आखिरी गुरुवार याने उद्यापन के दिन आठ सुवासिनियों और कुंवारी कन्याओं को बुलाकर उनको श्री महालक्ष्मी स्वरुप मानकर हल्दी और कुमकुम लगाकर उनकी पूजा करनी चाहिए। फिर महालक्ष्मीजी की आरती करके उन्हें प्रसाद के तौर पर एक–एक फल देना चाहिए। यदि हो सके तो श्री महालक्ष्मीजी का व्रत और पुस्तिका देकर उन्हें नमस्कार करना चाहिए। व्रत करनेवाला अगर पुरुष है तो उसे उन सुवासिनिओं को हल्दी और कुमकुम लगाकर तथा सुगंधित फूल देकर उनकी पूजा करनी चाहिए। श्री महालक्ष्मीजी का यह व्रत करते समय दिन भर उपवास करना चाहिए। फलाहार और दूध का सेवन कर सकते है। पूरा उपवास करना ठीक नहीं क्योंकि इस व्रत का आयोजन समृद्धि के लिए किया जाता है। यह व्रत सिर्फ पुरुष या महिला या पति–पत्नी दोनों मिलकर भी कर सकते हैं।

यदि किसी कारणवश किसी गुरुवार को व्रत न कर सकें तो सिर्फ उपवास करना चाहिए, पूजा नही करनी चाहिए। कोई और पूजा करता है तो करने दें। लेकिन यह गुरुवार गिनती में न लें। यदि किसी गुरुवार को शिवरात्रि आ गई तो उपवास फल और दूध लेकर ही करना चाहिए।

मार्गशीर्ष महीने के प्रथम गुरुवार को इस व्रत की शुरुआत करके चौथे गुरुवार इसका उद्यापन कर सकते हैं। यह व्रत करते समय रात को मीठा भोजन करके उपवास छोड़ना चाहिए। भोजन सात्विक होना चाहिए। प्याज, लहसुन, राई त्याज्य है।

श्री महालक्ष्मी की आराधना करने की विधी

श्री महालक्ष्मी माता की उपासना करने के अलग–अलग प्रकार हैं जिनमें जप से व्रत तक सब प्रकार शामिल है।

धनप्राप्ति के लिए 'ॐ श्रीं क्लु ॐ धनद धनं दहींमाम' यह मंत्र स्नान करने के बाद १०८ बार जप करना पड़ता है या 'ॐश्रीं महालक्ष्मी नमः' इस मंत्र का १०८ बार जप करना पड़ता है। इसमें शर्त एक ही है कि यह मंत्र दोपहर १२ बजे से पहले जपना चाहिए। सबेरा होने से पहले या उसी समय जप किया जाये तो उसका फल जल्दी मिलता है।

पौर्णिमा का व्रत भी बहुत लोकप्रिय है। जिन्हें जप करने का वक्त नहीं मिलता वे यह व्रत कर सकते हैं। पौर्णिमा के दिन स्नान करनेके बाद घर की साफ–सफाई करके किसी उच्छी जगह एक पाट रखना। चंदन घिसकर उस पर एक स्वस्तिक चिह्न बनाना। इस स्वस्तिक चिह्न के पीछे पानी से भरा हुआ कलश रखें। पानी में एक रुपया, दो पान और सुपारी रखना। आम के पांच या सात पत्ते साफ करके पानी में रखना; कलश के मुख पर नारियल रखना। इस तरह रोज स्नान करके पूजा करना। पूजा के लिए निरांजन और अगरबत्ती होना जरुरी है। अगर हो सके तो मंत्र का जप भी करना चाहिए।

यह 'कलश' शुक्ल पक्ष में ही रखना और शुक्ल पक्ष में ही बदलना चाहिए। बदलने के वक्त पानी में से रुपया और सुपारी बाहर निकालकर पानी किसी पेड़ की जड़ में डाल देना चाहिए। आम के पत्ते और खाने का पान निर्माल्य में रखना। फिर रुपया और नयें आम के पत्ते से सजाकर रखना। कभी–कभी नारियल के फल में से

पत्ते निकल आते हैं। ऐसे समय में पेड़ थोड़ा बड़ा होने के बाद उसको बाहर लगा देना चाहिए और नारियल बदल देना चाहिए।

पूजा का विधि

श्री लक्ष्मीजी की पूजा करते समय नया वस्त्र धारण करना चाहिए। माथे पर केशर या कुमकुम तिलक लगानी चाहिए। नई गद्दी बिछाकर उस पर नया चादर डालनी चाहिए। तकिया बिछाकर उसके ऊपर स्वस्तिक चिह्न बनाना चाहिए। गद्दी पर श्री लक्ष्मी, श्री गणेश या लक्ष्मीगणेश यंत्र बनाना चाहिए। सामने रंगोली बनाकर अपने दाहिनी और पूजा का साहित्य रखना चाहिए। पानी का लोटा दाहिनी ओर और अगरबत्ती जलाकर समई प्रज्वलित करना चाहिए। दाहिनी ओर शंख और बायीं ओर घंटा रखना चाहिए।

पूजा शुरु करने से पहले अपने से बड़ी उम्र के लोगों को नमस्कार करके आसन ग्रहण करना चाहिए। एक बार बैठने के बाद जब तक पूजा खत्म न हो जाए तब तक उठना नहीं चाहिए। पूजा करते समय किसी से भी बात नहीं करनी चाहिए। मन एकाग्र करके और स्थिर मन से पूजा की शुरुवात करनी चाहिए।

पूजा का उद्यापन कैसे करेंगे ?

रात को लक्ष्मीजी की पूजा करने के बाद मीठा प्रसाद देना। उसका थोड़ासा हिस्सा गो–माता को अर्पण करने के बाद शेष भाग खुद खा लेना चाहिए।

दुसरे दिन सुबह स्नान करने के बाद कलश में पन्ने या डहाली, घर में पाँच अलग अलग जगह पर रखे और पाणी समुंदर, नदी, तालाब, बावडी या तुलसी–वृंदावन में विसर्जित करे। उसके बाद जिस स्थान पर पूजा की थी उसी स्थान को हलदी और कुमकुम लगाके लक्ष्मी का नामस्मरण करे और थोडी देर के बाद पन्ने और डहाली निकालकर निर्माल्य में रखे।

उद्यापन के बाद कलश में रखा हुआ पैसा, सुपारी, नारियल और शुरू से जमा हुआ फुलों का समुदाय समुद्र, नदी, तालाब (याने बहते पानी में) छोड देना और उसे नमस्कार करना चाहिए।

जो भी यह व्रत करेंगे उन्हे मैं सुखी करुंगी ऐसा खुद लक्ष्मीजीने पद्मपुराण में कहा है।

श्री संतोषी माता

श्री. मुंबादेवी परिसर में माताजी का दर्शन करने के बाद आप सभी परिवार के साथ श्री. संतोषी माता का दर्शन कर सकते हैं। इस माताजी के मंदिर में हररोज पूजापाठ आरती होती हैं।

श्री. साईनाथ मंदिर और श्री. सत्यनारायण मंदिर

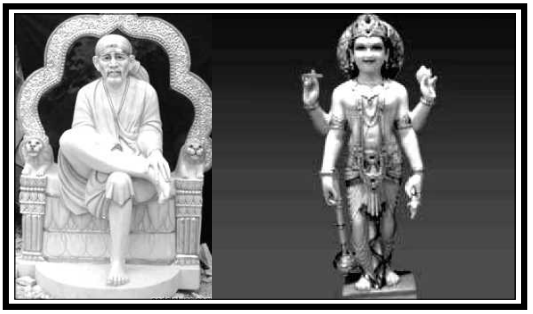

श्री. मुंबादेवी परिसर में माताजी का दर्शन करने के बाद आप सभी परिवार के साथ श्री. संतोषी माता का दर्शन कर सकते हैं। इस माताजी के मंदिर में हररोज पूजापाठ आरती होती हैं।

श्री हनुमान मंदिर

श्री. मुंबादेवी माताजी के मंदिर में श्री हनुमानजी की बड़ी मूर्ति हैं। यह मूर्ति को देखकर और दर्शन करके भाविक बहुत आनंदित होते हैं। हररोज पूजा-पाठ-आरती होती हैं।

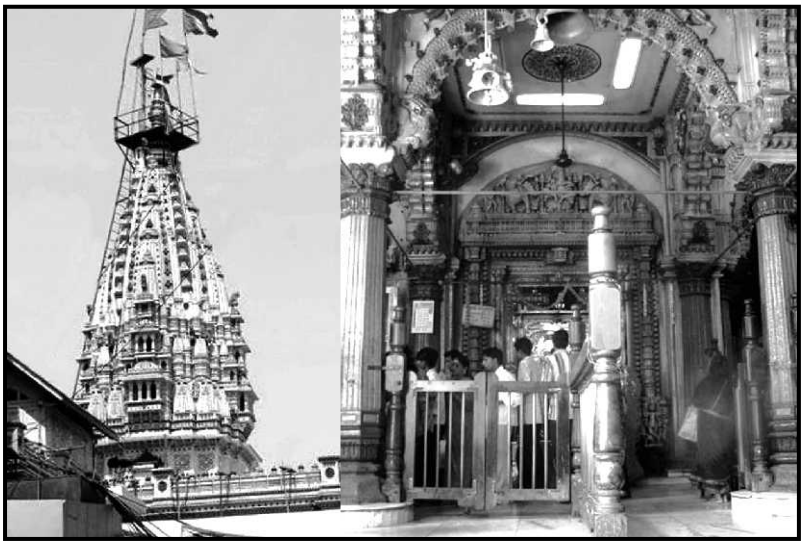

१. श्री. मुंबादेवी मंदिर का मुख्य प्रवेशद्वार सुबह ठिक ६.३० बजे दर्शन के लिए खोला जाता हैं।

२. सुबह ठिक ६.३०-६.३५ के दरम्यान मंगला आरती होती हैं।

३. सुबह ठिक ९.३० बजे महाआरती होती हैं।

४. दोपहर ठिक १२.१५ बजे नैवध रखा जाता हैं।

५. शाम को ठिक ६.३० बजे शिंगार आरती की जाती हैं।

६. शाम को ठिक ८.०० बजे महाआरती होती हैं।

७. शाम को ठिक ९.३० बजे शयन आरती होती हैं।

८. शयन आरती समाप्ती के बाद रात को ठिक १०.०० बजे श्री. मुंबादेवी मंदिर का मुख्य प्रवेशद्वार दर्शन के लिए बंद किया जाता हैं।

९. श्री मुंबादेवी मंदिर सुबह ६.३० बजे से लेकर रात १०.०० तक दर्शन के लिए खुला रहता हैं।

श्री मुंबादेवी माता के दर्शन के लिए तीन रास्ते

१. पहला रास्ता श्री मुंबादेवी मुख्य प्रवेशद्वार झवेरी बाजार से चालू होता हैं।
२. दुसरा रास्ता कंसारा चाल से मुंबादेवी मंदिर यहाँ बरतन की दुकाने हैं। वह बहुत प्रसिद्ध हैं।
३. तिसरा रास्ता झवेरी बाजार में बाबुपानवाला और शुक्ला कपडा के दुकान के बिच से रस्ता हैं।

श्री मुंबादेवी माता के विविध सात वाहन के रुप

सोमवार - पार्वती का रुप वाहन नंदी.
मंगलवार - भगवती का रुप वाहन गज (हाथी)
बुधवार - बऊचरी का रुप वाहन मुर्गा.
गुरुवार - लक्ष्मी का रुप वाहन गरुड़
शुक्रवार - सरस्वती का रुप वाहन हंस.
शनिवार - इंद्रावणी का रुप वाहन गज(हाथी)
रविवार - नवदुर्गा का रुप वाहन सिंह.
श्री. मुंबादेवी माताजी के विविध सात वाहन के रुप है इसी वाहनोंकी हर रोज पुजा कि जाती है

श्री गणपती मंदिर

श्री. मुंबादेवी माताजी के मंदिर में रोजाना हजारों भक्त आते रहतें हैं। इस मंदिर परिसर में श्री गणपती बाप्पा की बहुत आकर्षक और सुंदर मनमोहक मूर्ति हैं। यह मूर्ति के दर्शन करके भक्त बहुत प्रसन्न हो जाते हैं। यहाँ रोजाना आरती-पूजा मंत्र होती हैं।

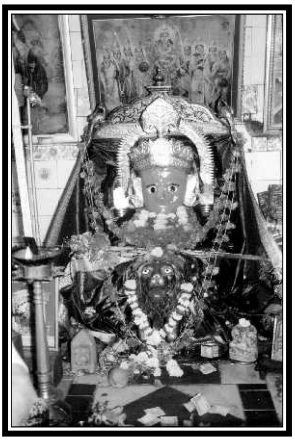

इंद्राणी श्री अंबाजी माताजी का मंदिर

श्री मुंबादेवी मंदिर के बाजूमें इंद्राणी श्री. अंबे माताजी का मंदिर हैं। यहाँ नवरात्र उत्सव, चैत्र नवरात्र उत्सव, दिपावली के उत्सव मनाये जाते हैं। इस मंदिर में रोज पूजा-पाठ ,सुबह शाम आरती होती हैं।

श्री राधाकृष्ण मंदिर और श्रीराम मंदिर

श्री.मुंबादेवी माताजी मंदिर के बराबर सामने की और श्री राधाकृष्ण मंदिर और श्रीराम मंदिर हैं। उत्सव के दरम्यान यहाँ बहुत भाविकोंकी भीड़ रहती हैं। इस मंदिर में हररोज पूजा-पाठ-आरती होती हैं।

श्री जगदीश मंदिर

श्री मुंबादेवी मंदिर के बाजू में जगदीशजी का मंदिर हैं। यहाँ रोज पूजा-पाठ-आरती होती हैं। इस मंदिर में प्रतिदिन पूजा-पाठ-आरती होती हैं।

गौशाला

श्री मुंबादेवी माताजी के मंदिर परिसर में छोटीसी गौशाला हैं । यहाँ आकर भक्तगण चारा और अन्य पदार्थ गौमाता को खिलाया जाता हैं । गौमाता को आहार खिलानेसे शुभ कर्म प्राप्त होता हैं ।

महापूजा एवं हवन का आयोजन

श्री मुंबादेवी माताजी के मंदिर परिसर में महापूजा एवं हवन का आयोजन किया जाता है । महापुजा और हवन ब्राह्मण द्वारा मंत्र, पुजापाठ, आरती, कथा के साथ श्रद्धा से होता है । हवन के लिए किसी भी प्रकार की सामग्री लाने की आवश्यकता नही होती । ब्राह्मण को दक्षिणा देकर महापुजा और हवन भक्तगण के लिए व्यवस्था है ।

देवई प्रसन्नर्तिहरे प्रसीदप्रसीद मातर्जगताऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य।।

श्री ज्वाला काली की आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवा हाथ जोड तेरे द्वार खड़े।
पान सुपाटी, ध्वजा-नारियल के ज्वाला तेरी भेंट धरे।
सुन जगदम्बे ? कर न विलंबे संतन के भंडार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जै काली कल्याण करे।।१।।

बुद्धि-विधाता तू जगमाता मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण-कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे।
जब-जब भीर पडे भक्तन पर तब-तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली।।२।।

बार-बार तै सब जल माह्यो तयणी रूप अनुप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या भोग करे।
संतन सुखदाई, सदा सहाई संत खड़े जयकार करें।
संतन प्रतिपाली ।।३।।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश फल लिये भेंट देन तव द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र धरे।
वार शनिश्चर कुंकम बरणी, जब लोकन पर हुकूम करे।
संतन प्रतिपाली।।४।।

कुपित होय कर दानव मारे चण्ड-मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप होय पल में संकट दूर करे।
सौम्य स्वभाव धरयो मेरी माता, जननी अर्ज कबूल करें।
संतन प्रतिपाली।।५।।

सिंहपीठ पर चढ़ी भवानी अटल भुवन में राज्य करें।
दर्शन पार्व मंगल गावै सिद्ध साधक तेरे ध्यान करे।
संतन प्रतिपाली।।६।।

ब्रह्मा वेद पढें तेरे द्वारे शिवशंकर हरि ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती चमर कुबेर डुलाय करे।
जय जननी, जय मातु भवानी,अखिल भुवन मे राज्य करे।
संतन प्रतिपाली।।७।।

श्री अम्बाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्माशिवरी ।।जय।।

मांग सिंदूर बिराजत टीको मृगमद को।
उज्वल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको ।।जय।।

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्तपुष्प गलमाला कण्ठन पर साजै।।जय।।

केहरि वाहन राजत, खड्ग -खप्र-धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखकारी।।जय।।

कानन-कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजन सम ज्योति ।।जय।।

शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिशासुर-घाती।
धूम्रविमोचन नैना निशिदिनि मदमाती ।।जय।।

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे।।जय।।

ब्रह्माणि, रूद्राणि, तुम कमला रानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।।जय।।

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरू।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ।।जय।।

तुमही जग की माता, तुम ही हो भर्ता।
भक्तन की दुख-हर्ता, सुख-सम्पति-कर्ता ।।जय।।

भुजा चार अति शोभित, खड्ग खप्रधारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।।जय।।

कंचन थार विराजत, अगर कपुर बाती।
शिवा क्षेत्र में राजत, कोटि रतन ज्योति ।।जय।।

श्री अम्बे की आरती, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-सम्पति पावै ।।जय।।

माताजी की आरती

जय आद्या शक्ती माँ, जय आद्या शक्ती
अखण्ड ब्रह्मांड निपाव्या (२) पडवे पंडित मा,
जयो जयो मा जगदम्बे..

द्वितिया वे स्वरूप शिव शक्ति जाणू मा शिव (२)
ब्रह्मा गणपति गाये (२) हर गाये हर मा.....जयो जयो।

तृतिया त्रण स्वरूप त्रिभुवनमा बेठा त्रिभुवनमा (२)
त्रयस्थकी त्रिवेणी (२) तुं त्रिवेणी मा.....जयो जयो।

चौथे चतुरा महालक्ष्मी, मा सचराचर व्याप्या-मासचरा (२)
चार भुजा चौवीशा (२) प्रगट्या दक्षिम मा.....जयो जयो।

पंचम पंच ऋषी पंचमि, गुण पदमां-मा पंचमि (२)
पंच तत्व त्या सोहिये (२) पांचे तत्वों मा....जयो जयो।

षष्ठी तुं नारायण, महिषासुर मार्यो मां महिषा (२)
नरनारीना रुपे (२) व्याप्या सर्वे मा....जयो जयो।

सप्तनी सप्त पाताल सावित्री सन्ध्या- मा सावित्री सन्ध्या (२)
गौं गंगा गायत्री (२) गौरी गीता मा....जयो जयो।

अष्टमी अष्टभुजा आई आनन्दा मां आई (२)
सुरनर मुनिवर जन्म्या देव दैत्यो मां...जयो जयो।

नवमी नवकुल नाग सेवे नवदुर्गा मा सेवे नव (२)
नवरात्रिनी पूजन शिवरात्रीना अर्चन कीदा हरब्रह्मा....जयो जयो।

दशमी दश अवतार, जय विजया दशमी, मा जय (२)
रामे रावण मार्यो (२), रावण रोय्यो मां..जयो जयो।

एकादशी अगियारस कात्यायनी कामां-मां कात्या (२)
काम दुर्गा कालिका (२) श्यामा ने रामा....जयो जयो।

बारसे बाला रूप बहुचरि अम्बा-मां बहुचरि (२)
बटुक भैरव सोहिये काल भैरव सोहिये
तारा छे तुझ मां....जयो जयो।

तेरसे तुलजा रूप तुं तारुणि माता-मातुं तारुणि (२)
ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव (२) गुण तारा गाता..जयो जयो।

चौदस चौदह रूप चंडी चामुंडा, मा चंडी चामुंडा (२)
भाव भक्ति कई आपो चतुराई कंई आपो
सिंहवाहिनी माता...जयो जयो।

पूनम कुंभ भर्यो मा सांभळजो करुणा-मा सांभळजो (२)
वसिष्ठदेवे वख्याणा मार्कण्डेय वख्याणा
गाये शुभ सविता.....जयो जयो।

त्र्यंबावटी नगरी, आई रुपावटी नगरी, मा पंचवटी नगरी (२)
साल सहस्त्र त्यां सोहिये (२) क्षमा करो गौरी
माँ दया करो गौरी ....जयो जयो।

संवत सोल सत्तावन शोभा सोलासे बावीस
मा सोलासे बावीस (२)
संवत सोलमां प्रगट्या (२) रेवाने तीरे....जयो जयो।

शिव शक्तिनी आरती जे कोई नर गाशे-मा जो कोई (२)
भणे शिवानन्दस्वामी (२) सुखसंपत्ति पाशे कैलाशे जाशे
मुम्बा दुख हरशे.....जयो जयो।

मुम्बादेवी माता की जय। जगदम्बे की जय।। अन्नपूर्णे माता की जय।।।

मातृ स्तवन

प्रातःकाले कुमारी कुसुम कुमकुमा जाप्यमाला जपंती।
माध्यान्हे प्रौढरूपा विकसित वदना चारूनेत्रा विशाला।।

सायान्हे वृद्धारूपा गलित कुचयुगा रून्डमाला वहन्ति।
सा देवी देव देवी त्रिभुवन जननी शांभवी मां पुनातु।।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी।
मातंगी विजया जया भगवती माती कुमारीश्वरी।.

नित्यानन्द करी वरा भयकरी शौन्दर्य रत्नाकरी।
निर्धूताखिल घोर पावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी।।

प्रालेयाचल वंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी।
भिक्षांन्देही कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी।।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राणवल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिध्यर्थ भिक्षां देहि च पार्वती।।

माताच पार्वती देवी पिता महेश्वरः।
बांधवा शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुनवत्रयम्।।

माताच कमला देवी पिता देवो जनार्दनः।
बांधवा विष्णु भक्ताश्च स्वदेशो भुनवत्रयम्।।

रात की आरती के बाद

गरबा १

सुणो अलबेली माता रे, मा अरजी मारी रे
दीन जाणी अम्बा किडिए दयाल मरजी तमारी रे

हुं तो गरजी गुलाम छुं मात रें, सा कशुं नव जाणुं रे
जय जय सृष्टि बहुचरोने संभाळ मात वखाणुं रे
जो सो अवगुण अमारो माफ करे, मा भव के पार करिए रे
सर्व धाम छे मा शक्ति प्रताप कहो केम करिये रे

जोवीअे छै अे जनुनीनी महेर रे, मा मारो तो मरीअे रे,
लाल पाडी लीला लहेर घेर नबनीघ भरीअे रे,

जोग माया करो सहाय, तुज आसरे रहीअे रे,
दृष्ट मार कष्ट काप अरि संहार, वारंवार शु करिअे रे

तु तो संत हुं तो रंक कर्म व्यंक जाणी नव गणशो रे,
शुं कैलेशने विलास पूरो आस दास जाणीने पाळो रे

गोरव धामनो गुलाम जदुराम अम्बे नाम सुस्थापो रे,
पुजु यंत्र जपु मंत्र शुभ तंत्र सदा ये वर आपो रे

गरबा २

साची मा शंबलपूर सेवो रे, मीठडो मा अमृतनो मेवो
साची मा असासुरी सेवो रे, मीठडो मा अमृतनो मेवो
आद्य शक्ती अंबे नव जाणु मा, नायी जश लेवो के...
साचुं जुठु करी पेट भरुं छुं मैया, एक दिन छें तेवो रे....
साची मा

ब्राह्मणोने पूछईने भोजन करावुं मा, दान दक्षिणा देवुं के...
गायत्री मा ना गुण न जाणु मैया, एक अक्षर केवो रें....
साची मा
ते माटे त्रिपुरारी ने भजिये मा, तारें तरवुं के...
जदुराम जननी मा कृपा करी छे अंबा, जाणी जेवो तेवो रे...
साची मा

साची मंमाया सेवो रें मीठडो मा अमृतनो मेवो

अथ तन्त्रोक्त रात्रिसूक्तम

ॐ विश्वेश्वरी जगद्धात्री स्थितीसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवती विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ।।१।।
ब्रह्मोवाच
त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।।२।।

अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्यां विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।।३।।

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पालते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।।४।।

विसृष्टो सृष्टिरूपा त्वं स्थितीरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये।।५।।

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृति ।
महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी।।६।।

प्रकृतिस्त्वंच सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रि महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।।७।।

त्व श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तृष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेंव च ।।८।।

खड्गिनी शूलिनी धोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुसुण्डी परिघायुधा।।९।।

सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी।
परापराणां परमा त्वमेच परमेश्वरी।।१०।।

यच्च किञ्चिंत् क्कचिद्वस्तु सदसद्धाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं कि स्तूयसे तदा।।११।।

यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावश नीतः कस्त्वां स्तोतुमहेश्वरः।।१२।।

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एर त।
कारतास्तेयतोऽतस्त्वां कःस्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।।१३।।

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरूदारैर्देवि संस्थिता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरै मधुकैटभौ।।१४।।

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।१५।।

इति रात्रिसूक्तम्

चतुर्थोऽध्यायः
इन्द्रादी देवताओंद्वारा देवीकी स्तुति

ॐ ऋषिरुवाच।।१।।
शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले त देव्या।
तां तुष्टुवः प्रणनितनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारूदेहाः ।।२।।
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तीसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शभानि सानः ।।३।।
यस्याः प्रभावतुलं भगवानन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिल जगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ।।४।।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सताकुलजनप्रभवस्य लज्जा
तांत्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।५।।
किं वर्णयामि तव रुपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितार्ताने तवाद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ।।६।।
हेतुष समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञानसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।७।।

यस्याः सम्सतसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयांति सकलेषु मखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्यच तृप्तिहेतु-
रूच्चार्यसे त्वमत एर जनैः स्वधा च ।।८।।
या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्खिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ।।९।।
शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ।।१०।।
मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसंगा।
श्री कैटभारिहृगयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।११।।
ईषत्समहाससममलं परिपूचन्द्र
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
अत्यभ्दुतं प्रह्रतमात्तरूषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ।।१२।।
दृष्टवातुं देवि कुपितं भ्रकुटीकराल
मुद्यच्छशआंकसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषास्तदतीव चित्रं
कैजीव्यते हि कुपितान्तकदर्शेनेन ।।१३।।
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ।।१४।।
ते सम्मतां जनपदेषु धनानि तेषां

तेषांयशांसि न च सीदति धर्मवर्गः
धनास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषांसदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ।।१५।।
धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मण्यत्यादृतः
प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्ग प्रयान्ति च ततो भवतीप्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ।।१६।।
दर्गुए स्मृता हरसि भीतीमशेषजन्तोः
स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःख भयहारिणी का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचिता ।।१७।।
एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्यं दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ।।१८।।
दृष्ट्वैवं किं न भवती प्रकरोति भस्म।
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वापि तेऽसिसाध्वी ।।१९।।
खडग्प्रअभिनिकरविस्फुरणैस्तथोग्रेः।
शूलाग्रकान्तिनवहेन दृषाऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड।
योग्यननं तव विलोकयतां तदेतत् ।।२०।।
दुर्वृत्तवृतशमनं तव देवि शीलं।
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ ह्रतदेवपराक्रमाणां।
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ।।२१।।
केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य।
रुपं त शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।

चित्ते कृपा समरनिष्ठुरताच दृष्टा।
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ।।२२।।
त्रेलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन।
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयामप्यपास्त-
स्माकमुन्मदसुररिभवं नमस्ते ।।२३।।
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खडेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च ।।२४।।
प्राच्यां रक्ष प्रतिच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथश्वरि ।।२५।।
सौम्यनि यानि रूपाणि त्रेलोक्ये विचरन्ति ते।
यानिचात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।।२६।।
खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसंगीनि तैरस्मान रक्ष सर्वतः ।.२७।.
ऋषिरूवाच ।।२८।।
एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोभ्दवैः।
आर्विता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनः।।२९।।
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूमिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्, प्राणतान सुरान ।।३०।।
देव्युवाच ।।३१।।
विग्रतां त्रिदंशाः। सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ।३२।।
देवा ऊचुः।।३३।।
भगवत्यां कृतं सर्व न किंचिदवशिष्यते ।।३४।।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरी ।।३५।।
संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।।३६।।
तस्वं वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेस्मप्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ।।३७।।

ऋषिरुवाच ।।३८।।
इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली वभूवान्तर्हिता नृप ।।३९।।
इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रहितैषिणी ।।४०।।
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुदभूता यथाभवत् ।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।४१।।
रक्षणाय च लोकांनां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातंयथावत्कथयामि ते ।।हरि ॐ ।। ।।४२।।
इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

तन्त्रोक्त रात्रि - सूक्तम का अविकल अनुवाद

हे विश्वधारिणी विश्वस्वामिनी महाविष्णु की शक्ति अपार।
पालन सृजय प्रलय कर्ता रहते तेरे ही आधार।।
भगवती अम्बिका नमस्कार।।१।।

यजन में स्वाहा बन, तू करती देवों का पालन।
और स्वधा बन अम्बे तू ही करती पितरों का तर्पण।।
त्रैलोक्य वंदिते नमस्कार ।।२।।

ॐकार की नित्य का तू स्वर बन शब्दों में छाई।
तेरी करूणा की बूँदे माँ जग में अमृत बन गई।।
भगवती संजीवनी नमस्कार।।३।।

वेद जननी तू ही गायत्री सान्ध्य समय की सावित्री।
ऋषियों की वाणी में गूंजी तेरी महिमा जगधात्री।
भगवती सरस्वति नमस्कार।।४।।

महाशक्ति तेरे अणुकण में स्थित है यह जगत विशाल।
पालन सृजन खेल हैं तेरे और अन्त मे प्रलय कराल।।
भगवती चंडिके नमस्कार।।५।।

नित्य सृष्टी तू ही जगदम्बे निखिलं भुवन मोहिना माया।
जगन्मयी तेरे लीला से बनता मिटता जग आया।।
भगवती कालिके नमस्कार।।६।।

नाम अनंत गिनू मैं कैसे कौन कहां कब गिन पाया।
महादेवि हे महासुरि तु मेधा स्मृति विद्यां माया।।
भगवती मोहिनी नमस्कार।।७।।

व्यक्त और अव्यक्त जगत की मूल प्रकृति तु त्रिगुणमयी।
काल रात्रि से दारूण बन्धन है, तेरे मोहमयी।
औ महारात्रि ले नमस्कार।।८।।

जननि ईश्वरी लक्ष्मी तू ही ज्ञान लक्षणा बौधमयी।
शान्ति श्रान्ति है नाम तुम्हारे लज्जा पुष्टिस्तुष्टिमयी।
भगवती मन्त्रमयि नमस्कार।।९।।

खड्ग शूल शोभितं हैं कर में बाण भुषुण्डी चक्र गदा।
दैत्यनाथ हित उग्रायुध तू भक्त हेतु मां अभय प्रदा।
भगवती जयन्ती नमस्कार।।१०।।

मंगल रूप निहारूं अम्बे सौम्य मनोरम मजुल वेश।
दृश्य और अदृश्य माधुरी हारि सुषमा कांति अशेष।
हे त्रिपुर सुन्दरी नमस्कार।।११।।

तुझसे बढकर कौन तत्व है मुझे बता दे परमेशी।
परम ब्रह्मा की पराशक्ति तू परात्परा है सर्वेशी।
भगवती चिन्मयी नमस्कार।।१२।।

जो कुछ भी है जहां कही भी जड़ चेतन या सार असार।
विश्व चेतने प्राण शक्ति तू करती सब में नित्य विहार।
भगवती चेतने नमस्कार।।१३।।

अणु अणु में स्पंदित होती भगवती तेरी जीव कला।
आत्मशक्ति तू अखिल विश्व की कैसे स्तुति करू भला।
भगवती सर्वमय नमस्कार।।१४।।

जगदीश्वर अव्यय नारायणि पालन सृजन प्रलयकर्ता।
तेरी इच्छा वश सोते है कैसे स्तुति करू बता।
भगवती सम्मोहिनी नमस्कार ।।१५।।

आदि देव हरि अज अविनाशी अमित तेजमय रूद्र अनंत।
तेरे शासन में बंध जन्मे भगवति तेरी शक्ति अनन्त।
हे आदि शक्ति ले नमस्कार।।१६।।

दिव्य कर्म है दिव्य पराक्रम जनमन पावन चरितं उदार।
दुर्गे तेरे ही चिन्तन से दुर्गम संकट होते पार।।
भगवती माँ दुर्गे नमस्कार।।१७।।

जग जा अम्बे जग जा अम्बे सुनले मेरी आर्त पुकार।
भक्त वत्सले शत्रु नासिनी कर दे कष्टों का संहार।।
हे सिद्धिदायिनी नमस्कार ।।१८।।

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा: ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहव: सन्ति सरला:
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुत: ।
मदीयाऽयं त्याग: समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दतं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरलम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकै: ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जन: को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपति: ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुन: ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपत: ॥ ८ ॥

नाराधितासि विधिना विविधौपचारै:
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभि: ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥ ९ ॥

आपत्सु मग्न: स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथा :
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥

मत्सम: पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥ ११ ॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

मुम्बादेवी की प्रार्थना

मुम्बा देवी माता मुम्बई नगरी की रखवाली है।
आप सर्वदा भक्तजनों की रक्षा करनेवाली है।
आदि कला से सदा आपका पूजन होता आया है।
सुर-नर मुनियों ने हरदम ही माई आपको ध्याया है।
यहाँ हमेशा ही मेला है बेशक दिन हो या रात हो।
सर्दी गर्मी कैसी भी हो बरस रही बरसात हो।।
आसपास से और दूरसे सेवक दर्शन को आते।
मुम्बा देवी माता की जयकार मनाकर है आते।
अंत नही गुणगाथाओ की माता महिमावाली हो।
मनोकामना दासजनों की पूर्ण करनेवाली है।
मुम्बादेवी माता मुम्बई नगरी की रखवाली है।

जय अंबे जय मुम्बादेवी माँ
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे
जय अम्बे जय अम्बे

बोलिए श्री मुम्बादेवी माता की जय
अन्नपूर्णे माता की जय
जगदम्बे माता की जय
द्वारिकानाथ की जय
हर-हर-हर महादेव
हरि ॐ

तेरे भवन में आए

तेरे भवन में आए गयो हे शेरावाली मैया।।
शेरावाली मैया है मुम्बादेवी मैया।।
तेरे भवन में आए गयो हे शेरावाली मैया।।

तेरे भवन में मैया ब्रह्मां भी आए।
ब्रह्मां भी आए मैया ब्रह्मां भी आए।
आकर वेद सुनाए गयो हे शेरावाली मैया ।।टेक।।

तेरे भवन में मैया विष्णु भी आए।
विष्णु भी आए मैया विष्णु भी आए।।
आयकर शंख बजाए गयो हे शेरावाली मैया।।टेक।।

तेरे भवन में मैया शंकर भी आए।
शंकर भी आए मैया शंकर भी आए।।
आयकर डमरू बजाए गयो हे शेरावाली मैया ।।टेक।।

तेरे भवन में मैया कृष्णा भी आए।
कृष्ण भी आए मैया कृष्ण भी आए।
आय कर वंशी बजाये गयो है शेरावाली मैया ।।टेक।।

तेरे भवन में मैया नारद भी आए।
नारद भी आए मैया नारद भी आए।।
आयकर भजन सुनाए गयों हे शेरावाली मैया।।टेक।।

तेरे भवन में मैया सुखियाँ भी आए।
सुखियाँ भी आए मैया दुखिया भी आए।।
आयकर दुखडा सुनाए गयों हे शेरावाली मैया।।टेक।।

शेरावाली मैया है वा मुम्बादेवी मैया।
मुम्बादेवी मैयो हे पहाडों वाली मैया।।
तेरे भवन में आय गयो हे शेरावाली मैया ।।टेक।।

शेरावाली मैया व पहाडोंवाली मैया।
तेरे भवन में आय गयो हे शेरावाली मैया।।

।। हरि ॐ।।

मैहेर की शारदा भवानी

मैहर की शारदा, भवानी तोहार गुण कितना वखानी।।
ऊँचे पहाडवा पे तोहरा मन्दिरवा, चमकेला मूरति - सुहानी ।।टेक।।

आल्हा के तू मैया अमर के देहलू, माँ तू बहुत वरदानी।।
तोहार गुण कितना वखानी ।।टेक।।

सारी दुनिया चरण सिर नावे, योगि यति मुनि ध्यान लगावे।
माँ तू बहुत वरदानी, तोहार गुण कितना वखानी ।।टेक।।

मैया के दुआरे एक अन्धा पुकारे, देहू ज्योति महारानी।
तोहार गुण कितना वखानी ।।टेक।।

मैया के दुआरे एक दुखिया पुकारे, दुख हरले हू माँ भवानी।
तोहार गुण कितना वखानी ।।टेक।।

मैया के द्वारे एक निर्धन पुकारे, माईया के दुवारे एक गरिबा पुकारे।
भर देहूँ झोली महारानी, तोहार गुण कितना वखानी ।।टेक।।

राम लला निती नेह लगायस, हर लेहू ओहूके गिरानी।
तोहार गुण कितना वखानी ।।टेक।।

अवध मातु भक्तन संग गवात।
महिमा मुम्बा धाम सुनावत।।

करत अरज कल्याणी, के तोहार गुण कितना वखानी।।
मैहर की शारदा भवानी, तोहार गुण कितना वखानी।।
बोलो सच्चे दरबार की जय।

श्री मुम्बादेवी माताजी की आरती

जयदेवी जयदेवी मातर जय मुम्बादेवी ।। माता जय मुम्बादेवी।।
नागर देवत पालन कर्ती त्रिभुवन जनयित्री।।
जय जगदंबे त्रिपुरे मातर सदा अन्नपूर्णे ।। म सदा ।।
मंधुकैटभ संमोहिनी देवी आद्यशक्ति उग्रे।। जय मुम्बा।।
महिषासुर संमर्दिनी मातर देवकार्य निरते मा ।।१।।
सुरनरमुनिजन वंदित चरणे गौरीकरुणार्द्रे ।।२।।
शुंभनिशुंभ निवाशिनी देवी भुक्तिमुक्ति वरदे ।। मा भक्त।।
चक्रराद निलये भवताराणि अंतर्मुख सुलभे ।।३।।
रुपवित्त जय किर्ति सर्व सुख विभवदान कुशले।।
आदप् दुर्ग विनशिनिदुर्गे दुर्गति दैन्य हरे ।।४।।
कालि लक्ष्मि शारदे सर्वमयी भक्ता भय वरदे ।। मा भक्ता।।
जगदीश्वरी दयिते जगज्जननी सामरस्य निपुणे ।।५।।
यंत्रमंत्र विग्रहे अंबिके नित्यशुद्धबुद्धे ।। मा नित्य।।
तरुणतरणि रक्तांगितुर्या श्री विद्ये गिरिजे। ।।६।।
कृष्णभगिनी बहुचरा भवानी जय करुणामूर्ति ।। मा।।
दनुजविदारिणी सज्जन तारिणि दुराचार शमने। ।।७।।
वेदांतेकथिता परात्परे परब्रह्म महिषी ।।मा।.
भक्तपरम पुरुषार्थ बोधिके जय मुम्बादेवी जय मुम्बादेवी ।।८।।

ॐ जय मुम्बादेवी